Date
Page 1

वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली का गुणात्मक एवं मात्रात्मक परिदृश्य -

ईश्वर-प्रदत्त जीवन को सही तरीके से जीने की कला को विकसित करना ही शिक्षा है। वास्तव में शिक्षा किसी समाज को सभ्य और उन्नत बनाने का ही एक उपनाम है। यह सर्वविदित तथ्य है, कि शिक्षा किसी भी व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के विकास की धुरी होती है। शिक्षा का सम्बन्ध सिर्फ साक्षरता से ही नहीं है बल्कि शिक्षा को मापक या पैमाने के तौर पर देखा जाता है।

शिक्षा का तात्पर्य मात्र केवल पैसा कमाना ही नहीं होता है अपितु मनुष्य को आंतरिक रूप से समृद्ध करते हुए उसे अपने परिवेश के प्रति सचेत करना ही वास्तविक शिक्षा है। साक्षरता और विकास के सम्बन्ध की प्रकृति अत्यन्त चुनौतीपूर्ण है, क्योंकि दोनों शब्दों में से किसी को भी परिभाषित करना आसान नहीं है।

सर्व प्रथम यह धारणा बनी की साक्षरता और विकास में के बीच एक सीधा- कार्य-कारण सम्बन्ध है। यह धारणा तीसरी दुनिया के देशों के बीच उन जन साक्षरता अभियानों की बुनियाद थी, जो इस आशा से की गई कि इससे देश के आर्थिक विकास में सहायता मिलेगी।

परन्तु ऐसा नहीं हुआ।

यदि हम मूल्यांकन की दृष्टि से देखे तो भारत में साक्षरता की स्थिति 2011 की जनगणना के अनुसार देश में साक्षरता दर 74.04% है जिसमें पुरुषों की साक्षारता दर 82.14% है और महिलायों की साक्षरता दर 65.46% है।। वहीं जब भारत स्वतन्त्र हुआ था अर्थात 1950-51 में साक्षरता दर 18% थी। जो वर्तमान लगभग 74.04% हो गयी है। इसे उल्लेखनीय उपलब्धि भारत सरकार की मानी जा सकती है। यह उपलब्धि भारत सरकार द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किये जा रहे असंख्य प्रयासो का परिणाम है। सरकार देश में शिक्षा के स्तर को ऊपर उठाने का यह प्रयास इसलिए कर रही है, ताकि लोगों के जीवन स्तर में सुधार लाया जा सके और दूसरे अन्य लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 संविधान के 86वें संशोधन के तहत सामने आया और 1 अप्रैल 2010 को लागू हुआ।

युनेस्को द्वारा जारी की गई विश्व भर में प्राथमिक शिक्षा की दशा-दिशा का जायजा लेने वाली रिपोर्ट में भारत में बुनियादी शिक्षा के कार्यक्रमों और अभियानों के नतिजों को सकारात्मक बताते हुए कहा गया है की भारत ने बच्चो को स्कूल भेजने के मानक पर दुनिया में

सबसे तीव्र प्रगति की है। परन्तु इसके बावजुद भी भारत उन २४ देशों में से एक है जो २०१५ तक भी सबके लिए शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीय लक्ष्यों को पुरा ~~नहीं~~ करने में सफल नहीं हो पायेगा। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि विश्व के कुल अशिक्षीतों का में से 34% केवल भारत में है।

उल्लेखनिय है कि आज विश्व भर में भारत सर्वाधिक तेजी से विकसित होने वाले देशों में सम्मिलित किया जाता है। लेकिन भारत आज अशिक्षा के स्तर पर विश्व में तीसरे पायदान पर स्थित है। ~~को~~ ग्लोबल एजुकेशन रिपोर्ट के अनुसार शिक्षा के क्षेत्र में तेजी से विकास करने वाले १२५ देशों में से भारत का स्थान १०० देशों में भी न होकर १०६ स्थान है। अगर इसकी तुलना पड़ोसी देश चीन से की जाये तो जिसका स्थान इस श्रेणी में ११वां है। भारत उससे बहुत पीछे है। इस रिपोर्ट के ये तथ्य भारत में शिक्षा और शिक्षा से संबधित विभिन्न नितियों एवं कानुनों के क्रियान्वयन का सच सभी के सम्मुख रखने के लिये पर्याप्त है।

प्राथमिक व प्रारम्भिक स्तर पर शिक्षा का मात्रात्मक व गुणात्मक परिदृश्य -

यदि हम प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर सार्वभौमिक नामांकन की बात करे तो 2000-01 व 2013-14 के बीच इस स्तर पर शिक्षा में नामांकन 2010-11 तक तो तेजी से बढ़ता हुआ प्रतीत होता है, परन्तु इसके बाद इसमें कुछ कमी आती दिखाई देती है। 2011-12 व 2013-14 के बीच प्राथमिक शिक्षा में कुल नामांकन घटकर 47 मिलियन रह गया जबकि लड़कियों और लड़को में यह नामांकन घटकर 2.5 मिलियन व 2.2 मिलियन रह गया।

~~प्राथमिक, उच्च प्राथमिक व प्रारम्भिक शिक्षा में नामांकन~~

~~(2000-01 - 2013-14) मिलियन में)~~

प्राथमिक, उच्च प्राथमिक व प्रारम्भिक शिक्षा में नामांकन

(2000-01 – 2013-14) मिलियन में

Year	प्राथमिक शिक्षा (कक्षा I-V)			उच्च प्राथमिक शिक्षा (कक्षा VI-VIII)			प्रारम्भिक शिक्षा (कक्षा I-VIII)		
	बालक	बालिकाएँ	कुल	बालक	बालिकाएँ	कुल	बालक	बालिकाएँ	कुल
2000-01	64.0	49.8	113.8	25.3	17.5	42.8	89.3	67.3	156.6
2001-02	63.6	50.3	113.9	26.1	18.7	44.8	89.7	69.0	158.7
2002-03	65.1	57.3	122.4	26.3	20.6	46.9	91.4	77.9	169.3
2003-04	68.4	59.9	128.3	27.3	21.5	48.8	95.7	81.4	177.1
2004-05	69.7	61.1	130.8	28.5	22.7	51.2	98.2	83.8	182.0
2005-06	70.5	61.6	132.1	28.9	23.3	52.2	99.4	84.9	184.3
2006-07	71.0	62.7	133.7	29.8	24.6	54.4	100.8	87.3	188.1
2007-08	71.1	64.4	135.5	31.0	26.2	57.4	102.1	90.6	192.7
2008-09	70.0	64.5	134.5	29.4	26.0	55.4	99.4	90.5	189.9
2009-10	70.8	64.8	135.6	31.8	27.6	62.1	102.6	92.4	195.0
2010-11	70.5	64.8	135.3	32.8	29.3	61.9	103.3	94.1	197.4
2011-12	70.8	66.3	137.1	31.8	30.1	59.9	102.6	96.4	199.0
2012-13	69.6	65.2	134.8	33.2	31.7	64.9	102.8	96.9	199.7
2013-14	68.6	63.8	132.4	34.2	32.3	66.5	102.8	96.1	198.9

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 2000-01 से 2013-14 के बीच प्राथमिक शिक्षा में कुल वृद्धि 18.6 मिलियन थी, जबकि लड़के व लड़कियों के नामांकन में यह वृद्धि इस अवधि में 4.6 मिलियन व 14 मिलियन रही। प्राथमिक शिक्षा के नामांकन कई राज्यों में स्थिर रहा जब कि कुछ राज्यों में इसमें कमी देखने को मिली। इस कमी के कारणों में एक कारण 0-6 वर्ष के बच्चों की जनसंख्या में कमी होना भी है, जिसका उल्लेख भारत की की 2001 व 2011 की जनगणना में मिलता है।

यदि उच्च प्राथमिक शिक्षा (VI-VIII) में नामांकन की बात करे तो 2000-01 में और 2013-14 के बीच उच्च प्राथमिक शिक्षा के नामांकन में 23.7 मिलियन की वृद्धि हो गयी (42.8 मिलियन से 66.5 मिलियन) लड़कियों के नामांकन में 14.8 मिलियन की वृद्धि हो गई। इस अवधि में लड़को के नामांकन में 8.9 मिलियन की वृद्धि हो गई।

न्युपा (NUEPA) से प्राप्त आंकड़ो के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उच्च ~~शिक्षा~~ प्राथमिक स्तर पर शिक्षा में स्थानान्तरण की दर भी 2006-07 में 83.7% की बजाय 2013-14 में 84.6% पाई ~~गई~~ गई।

इस प्रकार इन आँकड़ो से यह भी विदित होता है कि प्रारम्भिक शिक्षा में नामांकन दर 2012-13 में सबसे उच्च 199.7 मिलियन पर पहुँच गई थी। फिर 2013-14 में यह घटकर 198.9 मिलियन हो गई। ये सभी आँकड़े शिक्षा में मात्रात्मक प्रगति के सूचक हैं।

17-6-2021

आचार्य
[illegible] महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
[illegible], बलिया